रत्न विचार

रत्न	धातु	अंगुली	दिन	समय	नक्षत्र
माणिक	सोना	अनामिका	रवि	प्रातः	कृतिका, उ फाल्गुनी, उतराषाढा
मोती	चांदी	कनिष्ठिका	सोम	प्रातः	रोहिणी, हस्त, श्रवण
मूंगा	सोना	अनामिका	मंगल	प्रातः	म्गशिरा, चित्रा ,धनिष्ठा
पन्ना	सोना	कनिष्ठिका	बुध	प्रातः	अशलेषा, ज्येष्ठा, रेवती
पुखराज	सोना	तर्जनी	गुरू	प्रातः	पुर्नवसु, विशाखा, पूर्वाभद्रपद
हीरा	प्लेटीनम	कनिष्ठिका	शुक्र	प्रातः	भरणी, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा,
नीलम	चांदी	मध्यमा	शनि	सांयः	पुष्य, अनुराधा, उत्तराभाद्रपद
गोमेद	चांदी	मध्यमा	शनि	रात्रि	आद्रा, स्वाती, शतभिषा
लहसुनियां	चांदी	अनामिका	गुरू	रात्रि	अश्विनी, मघा, मूला

रत्न विचार

रत्नों का उपयोग यदि उचित रूप से किया जाए तो रत्न वास्तव में उचित फल प्रदान करने में सहायक सिद्ध होते हैं। इस कार्य में रत्न का चुनाव अत्यधिक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। इसके अतिरिक्त रत्न की उत्तमता भी अपना विशेष महत्त्व रखती है। किसी भी जातक के लिए निर्धारित किए गए शुभ रत्न, शुभ ग्रहों की किरणो को ग्रहण कर के मानव शरीर में उन किरणों का प्रसार कर शुभ फल प्रदान करने में उपयुक्त सिद्ध होते हैं। यहाँ तीन प्रकार के रत्नों का विवरण दिया गया है।

आजीवन रत्न : मूंगा
भाग्यवर्धक रत्न : माणिक
शुभ रत्न : पुखराज

रत्न विचार

रत्न	मंत्र
माणिक	ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।
मोती	ऊँ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः।
मूंगा	ऊँ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।
पन्ना	ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः।
पुखराज	ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः।
हीरा	ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
नीलम	ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
गोमेद	ऊँ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः।
लहसुनियां	ऊँ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः।

जैसा कि ऊपर बताया गया है कि किसी भी जातक की जन्म कुंडली में उत्तम ग्रहों की निर्बलता को दूर करने के लिए रत्नों का उपयोग किया जाता है तथा उसमें उपयुक्त रत्न का चुनाव तथा रत्न की उत्तमता अपना महत्त्व रखती है। ठीक इसी प्रकार किसी भी रत्न के धारण करने का समय भी अपना विशेष स्थान रखता है। उचित समय में किया गया कोई भी कार्य सिद्ध होता है। इसी उचित समय को हम मुहूर्त भी कहते हैं– ऐसा शास्त्रों में लिखा गया है। इस लिए रत्न धारण करते समय हमें निर्धारित दिवस, निर्धारित नक्षत्र तथा शुक्ल पक्ष का चुनाव करना चाहिए। किसी भी प्रकार का शुभ कार्य करते समय हमारे शास्त्रों में पूजा पाठ इत्यादि तथा अपने इष्ट देव का ध्यान करना बताया गया है। इस बात को ध्यान में रखकर हमें निर्धारित पूजा भी करनी चाहिए जिस से कि हमारे देवता हमें आशीर्वाद दें तथा हमारे कार्य को सफल बनाएं। रत्न जड़ित अंगूठी धारण करने से पहले इसे गंगा जल में धो लेना चहिए। इस कार्य में आप दूध का प्रयोग भी कर सकते हैं। इसके पश्चात् स्वच्छ मन से, आँखे बंद कर, प्रभु की उपासना करते हुए तथा निर्धारित मंत्रों का जाप संभव हो तो 108 बार करते हुए रत्न जड़ित अंगूठी को निर्धारित अंगुली में धारण करें तथा अपने शुभ चिंतकों में प्रसाद इत्यादि का वितरण करें। परिवार के बुजुर्ग सदस्यों से भी आशीर्वाद लें ताकि वे भी आपके मंगल भविष्य तथा आपकी इच्छाओं की पूर्ति हेतु कामना करें।

रत्नों द्वारा समस्याओं का निवारण

1 यदि आप अपने स्वास्थ्य को लेकर चिंतित हों अथवा अपना व्यक्तित्व आकर्षक बनाना चहाते हों तो आप मूंगा रत्न धारण कर सकते हैं।

2 यदि आप को धन अर्जित करने अथवा एकत्रित करने में समस्या आती हो अथवा आप जीवन में अपने पद ओहदे को लेकर चिंतित हों तो आप हीरा रत्न धारण कर सकते हैं।

3 यदि आपको प्रतीत होता हो कि आप के द्वारा किए गए प्रयास उत्तम नतीजे लाने में असमर्थ होते हैं अथवा आपके द्वारा किए गए परिश्रम का फल आपकी क्षमता से कम प्राप्त होता है। इस के अतिरिक्त यदि आपको सहोदरों से या आपके सहोदरों को कुछ समस्याएं हैं तो आप मूंगा रत्न धारण कर सकते हैं।

4 यदि आपके माता–पिता को अथवा आपको माता–पिता से किसी प्रकार का कष्ट प्रतीत होता हो अथवा आपको वाहन /जमीन जायदाद खरीदने या बनवाने में परेशानी का सामना करना पड़ता हो। यदि विद्यार्थी जीवन में शिक्षा ग्रहण करने में बाधाओं का सामना करना पड़े अथवा धर के सुख में कमी का आभास होता हो तो आप मोती रत्न धारण कर सकते हैं।

5 यदि आपको बुद्धि, ज्ञान, भावुकता, संतान व पेट इत्यादि से समस्याएं हों अथवा आपको सट्टेबाजी में हानि देखनी पड़ती हो तो आप माणिक रत्न धारण कर सकते हैं।

6 यदि आपके विवाह में अनचाहा विलंब हो रहा हो अथवा विवाहित जीवन में समस्याओं का सामना करना पड़ रहा हो। इसके अतिरिक्त यदि आप को किसी प्रकार की व्यापारिक साझेंदारी में नुकसान होता हो तो उस स्थिति में भी आप हीरा रत्न धारण कर सकते हैं।

7 यदि आप अनुभव करते हों कि आपका भाग्य आपका समुचित साथ नहीं देता अथवा जीवन में आपको अत्यधिक संघर्ष करने पड़े हों या कर रहे हों। इसके अतिरिक्त धर्म की ओर ले जाने वाले मार्ग को प्रशस्त करना चाहते हों तो आप पुखराज रत्न धारण कर सकते हैं।

8 यदि आप अपनी नौकरी या व्यापार में अस्थिरता का अनुभव करते हों तो आप नीलम रत्न धारण कर सकते हैं।

9 यदि आपको अपनी आय में उतार–चढ़ाव अनुभव करते हों तो आप नीलम रत्न धारण कर सकते हैं।